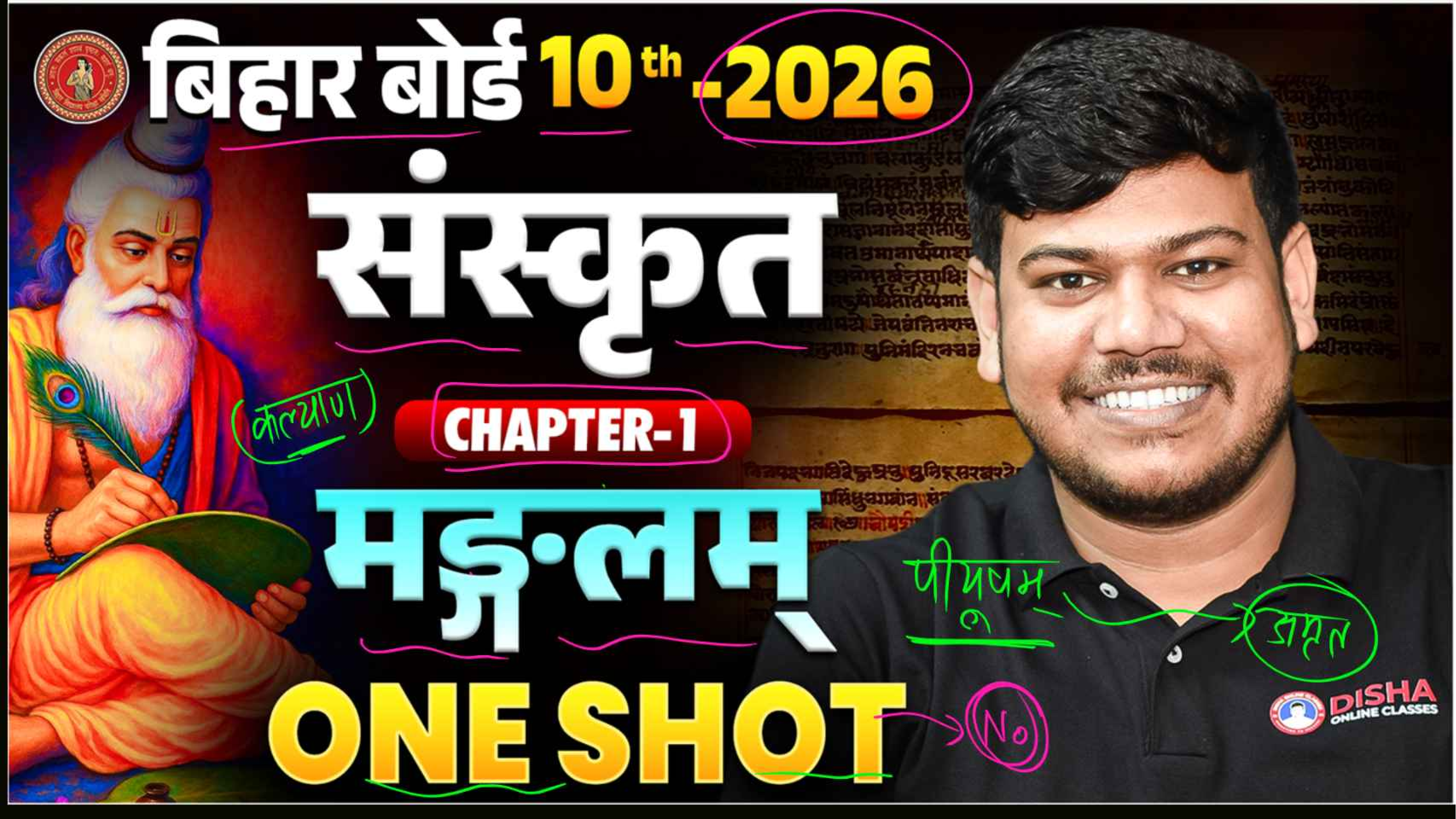
बिहार बोर्ड 10th -2026
संस्कृत
कल्याण
CHAPTER-1
मङ्गलम्
पीयूषम्
अमृत
ONE SHOT
No
DISHA
ONLINE CLASSES

NEW
10TH NEW BATCH-2026
DREAM 450+
सबसे अधिक TOPPER देने वाला बैच
FEATURE
Live Class
Recorded Class
All Notes
Panel Pdf
Test Series
Free Crash Course
SUBJECTS
MATH
SCIENCE
SOCIAL SCIENCE
SANSKRIT
HINDI
ENGLISH
URDU
Non Hindi
849
Rs.749/-
APP
DISHA
Contact-7700879453
Download Disha onine classes app
Google Play
SANJAY SIR

450+

480+

Share ✓

CBSC
MPB

500/500

489

प्रथमः पाठः मङ्गलम् (उपनिषद)

[रचनाकार - महर्षि वेदव्यास]

$8 \times 2 = 16$

Objective = 100

$50 + 16 = 66$

Days = 14

40-400 Book

60 - 55 → व्याकरण

$4 + 2 = 5\text{-}6$

$\frac{50}{14}$

50

रामायण के लेखक = महर्षि बाल्मीकि
महाभारत → वेद व्यास

→ वेद = 4
→ वेदांग = 6
→ उपनिषद = 108
→ पुराणों = 18

[**उपनिषदः** वैदिकवाङ्मयस्य अन्तिमे भागे दर्शनशास्त्रस्य सिद्धान्तान् प्रकटयन्ति। सर्वत्र परमपुरुषस्य परमात्मनः महिमा प्रधानतया गीयते। तेन परमात्मना जगत् व्याप्तम् अनुशासितं चास्ति। स एव सर्वेषां तपसां परमं लक्ष्यम्। अस्मिन् पाठे परमात्मपरा उपनिषदां पद्यात्मकाः पञ्च मन्त्राः संकलिताः सन्ति।]

उपनिषदों का नाम

1. ईशावास्य उपनिषद्
2. कठोपनिषद्
3. मुण्डकोपनिषद्
4. मुण्डकोपनिषद्
5. श्वेताश्वतर

अर्थात:-

[उपनिषद वैदिक साहित्य के अंतिम भाग में दर्शनशास्त्र के सिद्धांतों को प्रकट करते हैं। सर्वत्र परमपुरुष परमात्मा की महिमा का गुणगान गाई जाती है। उन्हीं परमात्मा से यें सारा संसार व्याप्त और अनुशासित है। यही सभी तपस्याओं का परम लक्ष्य है। इस पाठ में परमात्मा की प्राप्ति के लिए उपनिषद् पद्यात्मक रुप में पाँच मंत्रों में संकलित है।]

Yes

No

-: परिचय :-

इस पाठ में पांच मन्त्र क्रमशः ईशावास्य, कठ, मुण्डक तथा श्वेताश्वतर नामक उपनिषदों से संकलित है। ये मझा मङ्गलाचरण के रूप में पठनीय हैं। वैदिकसाहित्य में विशुद्ध आध्यात्मिक ग्रन्थों के रूप में उपनिषदों का महत्त्व है । इन्हें पढ़ने से परम सत्ता के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है, सत्य के अन्वेषण की प्रवृत्ति होती है तथा आध्यात्मिक खोज की उत्सुकता होती है । उपनिषदग्रन्थ विभिन्न वेदों से सम्बद्ध हैं।

Q. उपनिषद् क्या है ?

उतर- गुरुओं के समीप शांतिपूर्वक बैठकर अविद्यानाशक तथा ब्रह्मज्ञान (सत्य) से संबंधित जो ज्ञान सुना जाता है, वह उपनिषद् कहलाता है। इसकी संख्या लगभग 108 हैं। जिनमें 13 प्रमुख उपनिषद् है। इसके रचनाकार महर्षि वेदव्यास हैं। जिन्होनें महाभारत जैसे महाकाव्य की रचना कियें हैं।

-: 1. ईशावास्य उपनिषद :-

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥

सत्य का मुँह = सोने के पात्र

* किस उपनिषद् में सत्य की चर्चा

→ ईशा...

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥

अर्थात् - हे सूर्य सत्य का मुख सोने-सा पात्र से ढका हुआ है। इसलिए सत्य धर्म की प्राप्ति के लिए कृपा आप उस पात्र को हटा दीजिए।

आत्मा

-: 2. कठोपनिषद् :-

अणोरणीयान् महतो महीयान्
आत्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम् ।
तमक्रतुः पश्यति वीतशोको
धातुप्रसादान्महिमानमात्मनः ।।

- सूक्ष्म से सूक्ष्म एवं महान से महान = आत्मा
- जन्तु के हृदय : आत्मा
- आत्मा - जन्तु के हृदय में

- तीक्ष्ण बुद्धिवाले
- शोकरहित होकर

अणोरणीयान् महतो महीयान् आत्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम्।
तमक्रतुः पश्यति वीतशोको धातुप्रसादान्म हिमानमात्मनः ।।

अर्थात्- सुक्ष्म से सुक्ष्म और महान से महान आत्मा प्राणी के हृदय रुपी गुफा में निवास करती है। जिसका रहस्य जाननेवाले महान विद्वान पुरुष शोकरहित हो जाते हैं।

देवलोक तक पहुँचने का मार्ग = सत्य

-: 3. मुण्डक उपनिषद्र :-

मुण्डकोपनिषद्

Like

सत्यमेव जयते नानृतं
सत्येन पन्था विततो देवयानः ।
येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा
यत्र तत् सत्यस्य परं निधानम् ॥

जीवन - सत्य

सत्य

❤❤❤❤

- हमेशा जीत = सत्य की
- किसकी जीत नहीं होती = असत्य
- कौन? = ऋषि-मुनि → सत्यमार्ग

A
B

सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः ।
येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा यत्र तत् सत्यस्य परं निधानम् ॥

अर्थात् - सत्य की जीत होती है ना कि असत्य की सत्य से हीं देवलोक का रास्ता खुलता है। सभी ऋषि मुनि लोग सत्य के मार्ग पर चलके देवलोक को प्राप्त कर लेते हैं।

-: 4. मुण्डक उपनिषद् :-

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रे-
ऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय ।
तथा विद्वान् नामरूपाद् विमुक्त :
परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ॥

नाम और रूप को छोड़कर

- कहाँ = समुद्र
- विद्वान पुरुष = परमात्मा

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रे-ऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय ।
तथा विद्वान् नामरूपाद् विमुक्त : परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ॥

अर्थात् - जैसे नदियाँ अपना वास्तविक नाम और रुप को छोड़कर समुद्र में विलीन हो जाती है अर्थात मिल जाती है। ठीक उसी प्रकार सभी विद्वान पुरुष अपना वास्तविक नाम और रुप को त्यागकर दिव्य पुरुष ~~आत्मा~~ अर्थात ब्रह्म को प्राप्त कर लेते हैं।

परमात्मा

Target = $\frac{100}{100}$ ✓

1) लगभग : <u>हिन्दी</u>

-: 5.श्वेताश्वतर उपनिषद् :-

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्
आदित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति
नान्यः पन्था विद्यते ऽयनाय ।।

- वेदपुरुष = महान
- वेद = पुरुष
- परमात्मा
- अंधकार
- मुक्ति पाना
- साधक = मृत्यु को पार

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम् आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यते ऽयनाय ।।

अर्थात्- मैं अज्ञानी हूँ तथा अन्य विद्वान है ऐसा महान लोग समझते हैं। और ऐसा समझकर हीं मृत्यु को पार कर लेते हैं। वें जानते हैं कि इस संसार रुपी सागर को पार करने का इससे अच्छा मार्ग और कोई है हीं नहीं।

Test

- अमृत
- कल्याण
- वेद व्यास
- मंत्र = 5
- उपनिषदों = 4

- हिरण्मयेन पात्रेण = ईशावास्य
- अणोरणीयान् महतो = कठोप
- सत्यमेव जयते = मुण्डकोपनिषद्
- यथा नद्यः स्यन्दमानः समुद्रे = मुण्डकोपनिषद्
- वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम् = श्वेताश्वतर

वेद : श्वेत

- पद्यात्मक

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः -

1. उपनिषद' के रचनाकार कौन है?

(A) वेदव्यास

(B) बुद्ध

(C) कालिदास

(D) भास

2. मङ्गलम् पाठ के रचनाकार कौन है?

(A) कालिदास

(B) भास

(C) वेदव्यास

(D) बुद्ध

3. उपनिषद किसका अंतिम भाग है?

(A) वैदिकसाहित्य

(B) गीता

(C) बिष्णु

(D) कोई नहीं

4. मङ्गलम् पाठ कहाँ से संकलित है?

(A) वेद से

(B) वेदांग से

(C) उपनिषद से

(D) पुराण से

5. उपनिषदे कस्य महिमा प्रधानता गीयते ?

(A) परपुरुषस्य

(B) देवपुरुषस्य

(C) परमपुरुषस्य

(D) आत्मास्य

6. मङ्गलम् पाठ में कैसे मंत्र संकलित है?

(A) गद्यात्मक

(B) पद्यात्मक

(C) दोनों

(D) कोई नहीं

7. सबसे बड़ा खजाना क्या है?

(A) सत्य

(B) असत्य

(C) दोनों

(D) कोई नहीं

8. मङ्गलम् पाठ में कितने मंत्र है?

(A) चार

(B) पाँच

(C) छः

(D) दस

9. स्वर्णमय पात्र से किसका मुख ढका हुआ है?

(A) कलश का

(B) सत्य का

(C) घर का

(D) धर्म का

10. यह संपूर्ण संसार किसके द्वारा अनुशासित हैं ?

(A) आत्मा
(B) परमात्मा
(C) साहित्य
(D) कोई नहीं

11. हिरण्मयेन पात्रेण...किस उपनिषद से संकलित है?

(A) ईशावास्य

(B) कठ०

(C) मुण्डक

(D) सभी

12. सत्य का मुख किस पात्र से ढका है?

(A) हिरण्मय पात्र से

(B) ताम्रमय

(C) मृण्मय

(D) कोई नहीं

13. मङ्गलम् पाठ का प्रथम मंत्र संकलित है?

(A) ईशावास्य

(B) कठ०

(C) मुण्डक

(D) सभी

14. पूषन्नपावृणु शब्द का संधि-विच्छेद है?

(A) पूषन्+अपावृणु

(B) पूषन्+पावृणु

(C) पूषन + पावृणु

(D) कोई नहीं

15. सत्यस्यापिहितम् शब्द का संधि-विच्छेद है?

(A) सत्यस्य+अपिहितम्

(B) सत्य+पिहितम्

(C) सत्य+अपिहितम्

(D) कोई नहीं

16. अपिहितम् शब्द का सही अर्थ क्या है?

(A) ढका हुआ

(B) खुला हुआ

(C) मार्ग

(D) असत्य

17. अपावृणु शब्द का सही अर्थ क्या है?

(A) हटा दें

(B) असत्य

(C) मिला दें

(D) कोई नहीं

18. सत्य धर्म की प्राप्ति के लिए किसे हटा दें ?

(A) सोने सा पात्र को

(B) दोनों पात्र को

(C) ताम्बे सा पात्र को।

(D) कोई नहीं

19. उपनिषद किसका सिद्धांत प्रकट करता है?

(A) दर्शन का

(B) ग्रंथ का

(C) दोनों का

(D) कोई नहीं

20. हिरण्मय पात्र से किसका मुख ढका है?

(A) सत्य का

(B) असत्य का

(C) देवों का

(D) सभी का

21. महान से महान क्या है?

(A) सत्य

(B) असत्य

(C) आत्मा

(D) परमात्मा

22. किसकी महीमा सर्वत्र गायी गई है?

(A) सत्य

(B) असत्य

(C) आत्मा

(D) परमात्मा

23. उपनिषद के अंतिम भाग में किसका सिद्धांत है?

(A) दर्शनशास्त्र का

(B) सत्य का

(C) घर का

(D) धर्म का

24. यह संपूर्ण संसार किसके द्वारा व्याप्त हैं ?

(A) आत्मा

(B) परमात्मा

(C) साहित्य

(D) कोई नहीं

25. अणोरणीयान् महतो महीयान्...किस उपनिषद से संकलित है?

(A) ईशावास्य

(B) कठ०

(C) मुण्डक

(D) सभी

26. सूक्ष्म से सूक्ष्म क्या है?

(A) सत्य

(B) असत्य

(C) आत्मा

(D) परमात्मा

27. मङ्गलम् पाठ का दूसरा मंत्र संकलित है?

(A) ईशावास्य

(B) कठ०

(C) मुण्डक

(D) सभी

28. जन्तोर्निहितः शब्द का संधि-विच्छेद है?

(A) जन्तोः+निहितः

(B) जन्तः+र्निहितः

(C) जन्तः+निहितः

(D) कोई नहीं

29. नानृतं शब्द का संधि-विच्छेद है?

(A) न+अनृतम् ।

(B) ना+नृतम्

(C) नः+अनृतम्

(D) कोई नहीं

30. महतः शब्द का सही अर्थ क्या है?

(A) महान से

(B) मूर्खता

(C) मार्ग

(D) सत्य

31. जन्तोः शब्द का सही अर्थ क्या है?

(A) प्राणी के

(B) असत्य

(C) देवों के

(D) कोई नहीं

32. पन्था शब्द का सही अर्थ क्या हैं ?

(A) मार्ग

(B) रास्ता

(C) दोनों

(D) कोई नहीं

33. विद्वान शोकरहित होकर किसे देखता हैं?

(A) दर्शन को

(B) ग्रंथ को

(C) आत्मा को

(D) परमात्मा को

34. किसे वश में नहीं किया जा सकता है?

(A) सत्य को

(B) असत्य को

(C) आत्मा को

(D) सभी को

35. ब्राह्मण(सत्य) का मुख किससे ढका हैं?

(A) ताम्र से

(B) चाँदी से

(C) सोने से

(D) सभी से

36. छोटा से छोटा और बड़ा से बड़ा क्या है?

(A) सत्य

(B) असत्य

(C) आत्मा

(D) परमात्मा

37. अणोः अणीयान् कः?

(A) सत्य

(B) असत्य

(C) आत्मा

(D) परमात्मा

38. महतो महीयान् कः?

(A) सत्य

(B) असत्य

(C) आत्मा

(D) धर्म

39. ब्राह्मणः मुखं केन आच्छादितमस्ति?

(A) पात्रेण

(B) सरोवरे

(C) समुद्रे

(D) कोई नहीं

40. सत्यमेव जयते नानृतं...किस उपनिषद से संकलित है?

(A) ईशावास्य

(B) कठ०

(C) मुण्डक

(D) सभी

41. किम् जयते?

(A) सत्यस्य

(B) असत्यस्य

(C) आत्मा

(D) परमात्मा

42. मङ्गलम् पाठ का तीसरा मंत्र संकलित है?

(A) ईशावास्य

(B) कठ०

(C) मुण्डक

(D) सभी

43. उपैति शब्द का संधि-विच्छेद है?

(A) उप+एति

(B) जन्तः + र्निहितः

(C) जन्तः+निहितः

(D) कोई नहीं

44. ह्यासकामा शब्द का संधि-विच्छेद है?

(A) हि+आसकामा

(B) ना+नृतम्

(C) नः+अनृतम्

(D) कोई नहीं

45. अनृतम शब्द का सही अर्थ क्या है?

(A) मिथ्या

(B) झूठ

(C) दोनों

(D) कोई नहीं

46. मुखम् शब्द का सही अर्थ क्या है?

(A) मुख

(B) द्वार

(C) दोनों

(D) कोई नहीं

47. अणीयान् शब्द का सही अर्थ क्या हैं ?

(A) सूक्ष्म

(B) अणु

(C) दोनों

(D) कोई नहीं

48. किम् जयं प्राप्नोति ?

(A) सत्यस्य

(B) असत्यस्य

(C) आत्मा को

(D) परमात्मा को

49. किम् जयं न प्राप्नोती ?

(A) सत्यस्य

(B) असत्यस्य

(C) आत्मा को

(D) सभी को

50. सत्य से किसका मार्ग खुलता हैं?

(A) नरक का

(B) देवलोक का

(C) मृत्युलोक का

(D) सभी का

51. किसकी विजय होती है?

(A) सत्य

(B) असत्य

(C) आत्मा

(D) परमात्मा

52. देवलोक की प्राप्ति के लिए उत्तम मार्ग है-

(A) सत्य

(B) असत्य

(C) आत्मा

(D) परमात्मा

53. नदियाँ क्या छोड़कर समुद्र में मिल जाती है?

(A) नाम को

(B) रुप को

(C) दोनों को

(D) धर्म को

54. साधक किसको पार करते हैं ?

(A) आत्मा

(B) परमात्मा

(C) साहित्य

(D) मृत्यु को

55. अणोरणीयान् महतो महीयान्...किस उपनिषद से संकलित है?

(A) ईशावास्य

(B) कठ०

(C) मुण्डक

(D) सभी

56. सूक्ष्म से सूक्ष्म क्या है?

(A) सत्य

(B) असत्य

(C) आत्मा

(D) मृत्यु

57. मङ्गलम् पाठ का चौथा मंत्र संकलित है?

(A) ईशावास्य

(B) कठ०

(C) मुण्डक

(D) सभी

58. नदियाँ कहाँ जाकर मिलती है ?

(A) समुद्र में

(B) सरोवर में

(C) दोनों में

(D) कोई नहीं

59. विद्वान पुरुष अपना नाम त्यागकर किसमें मिल जाते है?

(A) आत्मास्य

(B) परमात्मा में

(C) दोनों में

(D) कोई नहीं

60. प्राणी के हृदय रुपी गुफा में कौन बन्द है?

(A) आत्मा

(B) परमात्मा

(C) ईश्वर

(D) सत्य

61. कौन नाम और रुप को छोड़कर समुद्र में मिल जाती है?

(A) प्राणी

(B) आत्मा

(C) देव

(D) नदियाँ

62. विद्वान सत्य मार्ग से कहाँ जाते हैं ?

(A) देवलोक

(B) नरकलोक

(C) दोनों

(D) कोई नहीं

63. किसके प्रभाव से विद्वान शोकरहित होते हैं?

(A) दर्शन के

(B) ग्रंथ के

(C) इंद्रिय के

(D) परमात्मा के

64. यथा नद्यः स्यन्दमानाः किस उपनिषद से संकलित है?

(A) ईशावास्य

(B) कठ०

(C) श्वेताश्वतर

(D) मुण्डक

65. वेदाहमेहतं पुरुषं महान्तम्....किस उपनिषद से संकलित हैं?

(A) ईशावास्य

(B) कठ०

(C) श्वेताश्वतर

(D) मुण्डक

1. आत्मा का स्वरूप कैसा है? वह कहाँ रहती है? अथवा आत्मा के स्वरूप का वर्णन करें।

उत्तर - आत्मा के स्वरूप का वर्णन करते हुए महर्षि वेदव्यास कहते हैं कि सुक्ष्म से सुक्ष्म और महान से महान आत्मा प्राणी के हृदय रुपी गुफा में निवास करती है। जिसका रहस्य जाननेवाले महान विद्वान पुरुष शोकरहित हो जाते हैं।

2. महान लोग संसार रुपी सागर को कैसे पार करते हैं? अथवा विद्वान मृत्यु को कैसे पराजित करते हैं?

उतर - ज्ञानी और अज्ञानी का वर्णन करते हुए महर्षि वेदव्यास कहते हैं कि मैं अज्ञानी हूँ तथा अन्य विद्वान है ऐसा महान लोग समझते हैं। और ऐसा समझकर हीं मृत्यु को पारकर लेते हैं। वें जानते हैं कि इस संसार रुपी सागर कोपार करने का इससे अच्छा मार्ग और कोई है हीं नहीं।

3. नदियाँ और विद्वान पुरुष में क्या समानता है? अथवा नदियाँ समुद्र में कैसे मिलती है?

उत्तर - जैसे नदियाँ अपना वास्तविक नाम और रुप को छोड़कर समुद्र में विलीन हो जाती है अर्थात मिल जाती है। ठीक उसी प्रकार सभी विद्वान पुरुष अपना वास्तविक नाम और रुप को त्यागकर दिव्य पुरुष आत्मा अर्थात ब्रह्म को प्राप्त कर लेते हैं।

4. मङ्गलम् पाठ का पाँच वाक्यों में परिचय दें।

उत्तर - इस पाठ में चार मन्त्र क्रमशः ईशावास्य, कठ, मुण्डक तथा श्वेताश्वतर नामक उपनिषदों से संकलित है। ये मङ्गलाचरण के रूप में पठनीय हैं। वैदिकसाहित्य में विशुद्ध आध्यात्मिक ग्रन्थों के रूप में उपनिषदों का महत्त्व है । इन्हें पढ़ने से परम सत्ता के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है उपनिषदग्रन्थ विभिन्न वेदों से सम्बद्ध हैं।

5. मङ्लम् पाठ के आधार पर सत्य की महता पर प्रकाश डालें।
अथवा मङ्गलम् पाठ के आधार पर सत्य का स्वरूप बतावें।

उत्तर - सत्य की जीत होती है ना कि असत्य की सत्य से हीं देवलोक का रास्ता खुलता है। सभी ऋषि मुनि लोग सत्य के मार्ग पर चलके देवलोक को प्राप्त कर लेते हैं।

Math = 8:15pm

Congratulation

क्लास कैसा लगा ?